
आदर्श प्रश्न- पत्र - 3
संकलित परीक्षा - I
विषय - हिंदी 'अ'
कक्षा - नवमी

निर्धारित समय: 3 घण्टे

अधिकतम अंक: 90

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं -
खंड क- 20 अंक
खंड ख- 15 अंक
खंड ग - 35 अंक
खंड घ - 20 अंक
 2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।
-

खंड-क
(अपठित गद्यांश)

1. (क) (ii) मेवाड़ राजघराने से
(ख) (iii) भगवान श्रीकृष्ण
(ग) (iv) अपने-अपने क्षेत्र के तत्कालीन भाषा में
(घ) (i) ईश्वर से सच्चा प्रेम
(ङ) (ii) भक्तिकाल
 2. (क) (iii) उपर्युक्त दोनों
(ख) (i) अपनी भाषा
(ग) (ii) नानक की
(घ) (iv) अरबी
(ङ) (iii) संस्कृति
 3. (क) (i) कायरता
(ख) (ii) मानवता को उठानेऔर सहारा देने के लिए
(ग) (ii) विरह-भावना
(घ) (ii) एकांत में रचे षडयंत्रों को भी असफल बनाता हूँ
(ङ) (i) बड़ी-बड़ी बंदूको से
 4. (क) (ii) कैकेयी
(ख) (i) कैकेयी
(ग) (iii) राम के लिए
(घ) (ii) प्रायश्चित का
(ङ) (iv) अनुप्रास
-

खण्ड - ख

(व्याकरण)

5. (क) उपसर्ग- उत् मूल शब्द- चारण ।
(ख) उपसर्ग- सत् मूल शब्द- धर्म ।
(ग) उपसर्ग- दुर् मूल शब्द- आग्रह ।
(घ) उपसर्ग- सत् मूल शब्द- आचार ।
6. (क) द्विगु समास ।
(ख) बहुव्रीहि समास ।
(ग) अव्ययीभाव ।
(घ) द्वन्द्व समास ।
7. (क) इच्छावाचक ।
(ख) संदेहवाचक ।
(ग) क्या देवकी नन्दन हिंदी पढ़ते हैं?
8. (क) अनुप्रास अलंकार
(ख) उपमा अलंकार
(ग) उपमा अलंकार
(घ) रूपक अलंकार

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. (क) प्रातः काल झूरी ने देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं । वह बैलों को देखकर स्नेह से गदगद हो गया और उनका प्रेमालिंगन किया ।
(ख) गले में आधा गराँव, पाँव कीचड़ में और आंखों में विद्रोहमय स्नेह के साथ बैल चरनी पर खड़े थे ।
(ग) बालसभा ने निश्चय किया कि बैलों को वीरता का अभिनंदन पत्र दिया जाए । बालसभा ने बैलों का बहुत सत्कार किया तथा बैलों के लिए कोई रोटी तथा कोई चोकर लाया ।
 10. (क) प्रेमचंद ने तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् बैल को गधे से नीचा स्थान दिया है क्योंकि बैल कभी-कभी अपना असन्तोष प्रकट करने हेतु हंसक रूप धारण कर लेता है।
(ख) लेखक को अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । लेखक को पूरी यात्रा के दौरान डाकुओं के भय के साये में रहना पड़ा । ऊँचे नीचे पहाड़ी रास्ते तथा तेज धूप में काफी पैदल चलना पड़ा । अपनी जान बचाने के लिए भीख भी माँगनी पड़ी । साथियों से बिछड़ कर अनजान मार्ग पर अकेले यात्रा करनी पड़ी। भद्र रूप छिपाकर भिखारियों के रूप में रहना लेखक के लिए सबसे कष्ट दायी था।
(ग) आधुनिकता का तात्पर्य हमारे विचार और व्यवहार दोनों से है। तर्कशीलता के पैमाने पर आलोचनात्मक दृष्टि के साथ नवीनता को स्वीकारना आधुनिकता है। आधुनिकता को जब वैचारिक आग्रह के साथ स्वीकार न कर उसे एक फैशन के रूप में अपना लेते हैं तो उसका रूप बदलकर छद्म आधुनिकता का हो जाता है।
(घ) हीरा और मोती को झूरी ने बड़े लाड़-प्यार से पाला था अतः वे झूरी को छोड़ना नहीं चाहते थे । और गया के यहाँ जाने के बाद उन्हें उसकी दुरंगीनीति का सामना करना पड़ा । उन्हें रुचिकर भोजन नहीं दिया गया और कामज्यादा लिया गया । इस परिस्थिति में वे विद्रोही हो गए ।
-

(ड) लेखक ने अपनी यात्रा वृत्तांत में तिब्बत की सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन करते हुए लिखा है कि वहाँ अपरिचित व्यक्तियों को भी घर की महिलाएँ चाय बनाकर दे देती हैं। भिखारियों और संदेहास्पद व्यक्तियों को छोड़कर कोई भी उनके घर के अंदर तक जा सकता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारी भारतीयपरिकल्पना 'अतिथि देवो भवः' को तिब्बतियों ने पूरी तरह से लागू किया है।

11.(क) उपर्युक्त काव्यांश में कृष्ण के सौंदर्य पर मुग्ध गोपियों का वर्णन है, जिसमें एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी ! मैं कृष्ण की तरह ही अपने सिर पर मोर के पंखों का मुकुट तथा गले में माला पहनूँगी। पीले वस्त्र धारण करूँगी तथा उन्हीं की तरह गायों के पीछे लाठी लेकर वन-वन घूमूँगी। मेरे कृष्ण को जो भी अच्छा लगता है वो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। पर हे सखी ! कृष्ण की उस मुरली को मैं कभी अपने होठों पर नहीं रखूँगी क्योंकि उसी मुरली ने श्रीकृष्ण को हमसे दूर किया है।

(ख) उपर्युक्त काव्यांश में श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन है। इसमें कवि ने श्रीकृष्ण के सौंदर्य से मोहित गोपियों की उस मुग्धता का चित्रण किया है जिसमें वे स्वयं कृष्ण का रूप धारण कर लेना चाहती हैं। काव्यांश में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

(ग) श्रीकृष्ण को।

12.(क) ज्ञान की आँधी के फलस्वरूप भक्त के जीवन पर पड़ा अज्ञान का पर्दा उड़ जाता है तथा मन में जमा क्लेश और संकटों का अंधकार दूर हो जाता है। मोह-माया के बंधनों से मुक्त होकर भक्त प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है।

(ख) कवयित्री ने उपर्युक्त पंक्ति में मनुष्य को सांसारिक भोग तथा प्रभु भक्ति अर्थात् त्याग के बीच का मार्ग अपनाने को प्रेरित किया है। उनके अनुसार सांसारिक उपासकों के अधिकाधिक भोग से बहुत लाभ नहीं होगा तथा अत्यधिक त्याग की भावना अहंकार उत्पन्न करेगी। अतः दोनों के बीच का मार्ग अपनाना ही श्रेयस्कर है।

(ग) श्रीकृष्ण अत्यंत मनमोहक हैं। उनकी प्रत्येक वस्तु; यथा - उनका रत्न-रूप, मधुर मुसकान, बंशी की धुन, पीत वस्त्र, मोर मुकुट, कुंजमाला अत्यंत गुणवान प्रतीत होती है। और वे संपूर्ण ब्रजवासियों को अपने मोहपाश में बाँध लेती हैं। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण का गोधन-गायन ब्रजवासियों पर जादू-सा असर करता है।

(घ) कैदी और कोकिला पाठ में कवि ने माखनलाल चतुर्वेदी ने भारत में अंग्रेजों के शासन की करनी को काली बताया है क्योंकि अंग्रेज भारतीयों का शोषण कर रहे थे। स्वतंत्रता की आवाज उठानेवालों को जेल की काल कोठरी में डालकर गंभीर यंत्रणाएँ दी जाती थीं। वे किसान, मजदूर, दुकानदार सब पर लगातार अत्याचार कर रहे थे। उनके शासन में कोई भी सुखी नहीं था।

(ङ) कवि ने ग्राम श्री कविता में ओस की बूंदों से आच्छादित तिनकों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ओस आच्छादित तिनकों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं और हवा चलती है तो तिनके गतिमान हो उठते हैं और उस पर अवलंबित बूँदे हवा और धूप का स्पर्श पाकर चमक उठती हैं।

13. प्रश्नोक्त कथन लेखिका के स्वतंत्र विचारों का परिचायक है जिसे वे बहुत पसंद करती थीं। वास्तव में अकेलेपन में व्यक्ति स्वतंत्र होता है तथा उसे कहीं आने-जाने या किसी अन्य कार्य के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। लेखिका की बहन रेणु दृढ़निश्चयी थीं। वह जिस काम को सोचती थी, उसे करके ही रहती थी। इसमें उसकी जिद कम दृढ़ निश्चय अधिक झलकता। एक बार वह बारिश में दो मील दूर स्कूल पैदल जाने की जिद

पर अड़ी रही। सब कहते रहे कि स्कूल बंद होगा, पर वह न मानी। बारिश में गई अर स्कूल बंद देखकर वापस आ गई। इस तरह वह मंजिल की ओर अकेले बढ़ने की दिशा में उत्सुक दिखती है। लेखिका द्वारा जीवन की राह पर अकेले चलते हुए डालमिया नगर में स्त्री-पुरुषों के नाटक खेलकर सामाजिक कार्य हेतु धन एकत्र करना तथा कर्नाटक में अथक प्रयास से अंग्रेजी-कन्नड़-हिंदी तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोलकर उसे मान्यता दिलाना उनके अच्छे व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।

खण्ड-घ

('लेखन')

14.

“संयुक्त परिवार: एक ज़रूरत”

संयुक्त परिवार का र्थ है: संयुक्त रूप में रहने वाला परिवार। भारतीय संस्कृति में बहुत स्थान रखता है। संयुक्त परिवार में एक नहीं बल्कि अनेक परिवार प्रेम से साथ-साथ रहते हैं। इसमें चाचा-चाची, ताऊ-ताई तथा उनके बच्चों का परिवार मिल-जुलकर एक ही छत के नीचे वास करते हैं। इसके बहुत से लाभ हैं। यहाँ कोई अपना खास नहीं होता सभी अपने होते हैं। एक की बीमारी पर सारे घर वाले चिंतित होते हैं और सभी उनकी देखभाल करने को तत्पर रहते हैं। आज के आधुनिक युग में संयुक्त परिवार दम तोड़ रहे हैं। लोग बस अपने परिवार को अपना समझते हैं और भाई-बहनों के परिवार की लिए अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते। इस तरह संयुक्त परिवार आज बहुत कम दिखाई देते हैं। इनकी झलकियाँ बस फिल्मों के अंदर दिखाई देती हैं। असल जिंदगी में संयुक्त परिवार दम तोड़ रहे हैं। आज के समय में इनकी अनिवार्यता महत्वपूर्ण है। हम भूल जाते हैं कि संयुक्त परिवार में हमारे बच्चे एक अच्छी देखभाल पाते हैं। बड़ों का साया उन्हें जीवन की अच्छी समझ देता है। उसे संभालने के लिए कई हाथ एक साथ खड़े होते हैं। परन्तु नहीं हम इसकी विशेषताओं को अपने स्वार्थों के आगे नकार देते हैं। छोटे परिवार में इस प्रकार की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं। परन्तु इसमें प्रगति के असर अधिक होते हैं। यही कारण है कि लोग आज छोटे परिवार को महत्व दे रहे हैं। छोटे परिवार में जवाबदेही और ज़िम्मेदारियाँ कम हो जाती हैं। खर्च कम होते हैं अतः मनुष्य अपने लिए धन जमा कर पाता है। उस पर आर्थिक दबाव नहीं पड़ता है। इस तरह वह कम समय में बहुत अधिक धन जमा कर लेता है। परन्तु छोटे परिवार में लोगों को सुरक्षा की भावना कम होती है। बच्चे परिवार की कमी के कारण अधिक बिगड़ते हैं। ऐसे में हमें इनके महत्व का पता चलता है। संयुक्त परिवार है, तो जीवन मूल्य प्रेम, एकता इत्यादि को बल मिलता है। इसके कारण ही जीवन स्वर्ग हो सकता है।

15. प्रति,

संपादक,

हिंदुस्तान टाइम्स,

मुम्बई- 400603

महोदय,

मैं सेक्टर 10, ठाणे ईस्ट, नवी मुम्बई स्थित पार्क की दुर्दशा की ओर मुम्बई सरकार और नगर निगम का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। इस पार्क को बड़े जोश के साथ सजाया गया था। इसमें तरह-तरह के पेड़, झूले, वृक्ष की कतार आदि थी। अच्छी व्यवस्था थी, परन्तु अब लगता है कि इसके दुर्भाग्य के दिन आ गए हैं। यहाँ प्रायः सत्संग, मेले या शादियों का आयोजन होता रहता है। इससे पार्क का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। घास सुख गई है। पार्क की चौकीदारी को जगह-जगह से तोड़ दिया गया है। माली हमेशा गायब रहता है। लोगो

ने इसमें कूड़ा-कचरा डालना आरंभ कर दिया है। यही कूड़ा इसी प्रकार डाला जाता रहा तो यह पार्क एक विशाल कूड़ाघर में बदल जाएगा।

सरकार और नगर निगम से विनम्र निवेदन यह है कि इस पार्क की दशा जो सुधारे तथा दोषी अधिकारियों को दंड दें।

धन्यवाद,

भवदीय,

शशांक

सेक्टर-10, ठाणे

मुम्बई-400603

16.

“सड़कों पर दिन-प्रतिदिन होने वाली दुर्घटना”

आजकल सड़कों पर वाहनों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन बढ़ते वाहनों से जहाँ प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है वहीं सड़क दुर्घटनाओं की संख्या का ग्राफ भी ऊपर उठता जा रहा है। वाहन जहाँ अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हैं वहीं जरा-सी संख्या का ग्राफ भी ऊपर उठता जा रहा है। वाहन जहाँ अनेक सुख सुविधाएँ प्रदान करते हैं वहीं जरा-सी लापरवाही से लोगों को अपनी जान भी गँवानी पड़ती है। आजकल सड़कों पर वाहनों की संख्या अनियमित होती चली जा रही है। इनके कारण प्रायः जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सभी एक-दूसरे से आगे निकल जाने के लिए उतावले रहते हैं। इसी प्रयास में वाहनों द्वारा यातायात के नियमों का उल्लंघन कर दिया जाता है। जहाँ नियमों का उल्लंघन हुआ वहीं दुर्घटना घट जाती है। सड़क दुर्घटना हो जाना आज एक सामान्य-सी बात हो गई है। सड़क दुर्घटना असावधानी के कारण घटित होती है। कल ही तिलक नगर चौराहे पर एक दुर्घटना घट गई। दो वाहन आपस में बुरी तरह टकरा गए। दोनों ही गाड़ी वाले बाल-बाल बच गए। परन्तु गाड़ियों का बुरा हाल हो गया। इस प्रकार की दुर्घटनाओं पर नियंत्रण करना आवश्यक है। नियमों का उल्लंघन करने वालों के साथ सख्ती से पेश आने की आवश्यकता है।
